आधुनिक शिक्षण विधियों का शिक्षकों के आत्मविश्वास पर प्रभाव

[1]प्रियंका मिश्रा, [2]डॉ. जय प्रकाश मिश्रा
[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक
[1–2]विभागः शिक्षा, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ

सार
यह अध्ययन आधुनिक शिक्षण विधियों के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर प्रभाव की जांच करता है और इसे पारंपरिक शिक्षण विधियों से तुलना करता है। पारंपरिक शिक्षण विधियाँ, जो आमतौर पर शिक्षक–केंद्रित होती हैं और याद करने पर आधारित होती हैं, लंबे समय से वैश्विक शिक्षा प्रणालियों की नींव रही हैं। हालांकि, ये विधियाँ अब आधुनिक दृष्टिकोणों से चुनौतीपूर्ण हो रही हैं, जो छात्र–केंद्रित अधिगम, सक्रिय भागीदारी, और प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर जोर देती हैं। समस्या–आधारित शिक्षण, परियोजना–आधारित शिक्षण, और फ्लिप्ड क्लासरूम जैसी आधुनिक शिक्षण विधियाँ छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच, सहयोग और स्वायत्तता को बढ़ावा देती हैं, जिससे शिक्षकों के आत्मविश्वास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह शोध शिक्षकों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में व्यावसायिक विकास की भूमिका को उजागर करता है और आधुनिक शिक्षण विधियों को अपनाने में आने वाली बाधाओं को भी बताता है। यह प्रशिक्षण और समर्थन के माध्यम से शिक्षक आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए सुझाव देता है।

मुख्य शब्दः आधुनिक शिक्षण विधियाँ, शिक्षक का आत्मविश्वास, पारंपरिक शिक्षण, सक्रिय अधिगम, प्रौद्योगिकी एकीकरण, व्यावसायिक विकास, छात्र–केंद्रित अधिगम।

परिचयः
दुनिया भर में शिक्षा प्रणालियाँ पारंपरिक शिक्षक–केंद्रित शिक्षण विधियों पर निर्भर रही हैं, जो आमतौर पर व्याख्यान, रटने और मानकीकृत परीक्षणों पर आधारित होती हैं। ये विधियाँ, हालांकि बुनियादी ज्ञान के संप्रेषण के लिए प्रभावी हैं, गहरे जुड़ाव, आलोचनात्मक सोच और छात्रों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में अक्सर असफल रहती हैं। जैसे–जैसे एक गतिशील और इंटरएक्टिव शिक्षण वातावरण की आवश्यकता बढ़ी है, आधुनिक शिक्षण विधियाँ एक शक्तिशाली विकल्प के रूप में सामने आई हैं। ये विधियाँ, जो रचनावादी अधिगम सिद्धांतों पर आधारित हैं, सक्रिय अधिगम, समस्या–समाधान और प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर जोर देती हैं, ताकि एक अधिक आकर्षक और समावेशी कक्षा वातावरण बनाया जा सके। यह बदलाव केवल छात्रों के अधिगम अनुभवों को पुनः आकार नहीं दे रहा, बल्कि शिक्षकों के आत्मविश्वास और उनकी कक्षा प्रबंधन क्षमता को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है। यह शोध इस बात की जांच करता है कि कैसे आधुनिक शिक्षण विधियाँ शिक्षकों के आत्मविश्वास को प्रभावित करती हैं और इस संक्रमण के दौरान आने वाली चुनौतियों और अवसरों को भी उजागर करता है।

पारंपरिक शिक्षण विधियों का अवलोकन
पारंपरिक शिक्षण विधियाँ विश्व भर में शिक्षा प्रणालियों की आधारशिला रही हैं। इन विधियों को अक्सर ''पारंपरिक'' या ''परंपरागत'' कहा जाता है और ये आम तौर पर शिक्षक–केंद्रित शिक्षण पर जोर देती हैं, जहाँ शिक्षक ज्ञान का प्राथमिक स्रोत होता है और छात्र उस ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं। ऐतिहासिक प्रथाओं पर आधारित यह दृष्टिकोण कई शिक्षा प्रणालियों, विशेष रूप से पश्चिमी देशों में, की नींव रहा है।

परंपरागत शिक्षण की विशेषताएं
पारंपरिक शिक्षण विधियाँ, जो अक्सर व्याख्यानों, रटने और दोहराव पर आधारित होती हैं, का उद्देश्य विषयवस्तु

को एक संरचित और अनुमानित तरीके से प्रस्तुत करना होता है। एक सामान्य कक्षा में, शिक्षक सामने खड़े होकर प्रत्यक्ष निर्देश के माध्यम से पाठ पढ़ाते हैं, जबकि छात्र सुनते हैं, नोट्स लेते हैं और कभी–कभी प्रश्नों के उत्तर देते हैं। छात्रों के बीच आपसी संवाद या निर्धारित पाठ्यक्रम से परे विषयों की खोज के लिए अक्सर बहुत कम गुंजाइश होती है।

परंपरागत शिक्षण विधियों की प्रमुख विशेषताओं में निम्नलिखित शामिल हैं

- व्याख्यान आधारित शिक्षणः शिक्षक अक्सर पाठ्यपुस्तकों और ब्लैकबोर्ड या व्हाइटबोर्ड जैसे दृश्य साधनों पर निर्भर रहते हुए, एकालाप प्रारूप में जानकारी देते हैं (डार्लिंग–हैमंड, 2010)।
- रटने की विधिः छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे अंतर्निहित अवधारणाओं को समझने पर अधिक जोर दिए बिना तथ्यों, सूत्रों या प्रक्रियाओं को याद करें (किर्शनेर, स्वेलर, और क्लार्क, 2006)।
- मानकीकृत परीक्षणः छात्रों की सफलता को अक्सर उन परीक्षाओं के माध्यम से मापा जाता है जो विशिष्ट जानकारी को याद करने और पुन प्राप्त करने का परीक्षण करती हैं (पॉपहम, 2009)।
- शिक्षक–केंद्रित दृष्टिकोणः कक्षा में शिक्षक ही प्राथमिक प्राधिकारी होता है, और छात्रों के पास सक्रिय रूप से भाग लेने के सीमित अवसर होते हैं।

परंपरागत विधियों की सीमाएँ

हालांकि पारंपरिक शिक्षण विधियों का अपना महत्व है, विशेष रूप से उन विषयों में जिनमें बुनियादी ज्ञान की ठोस नींव की आवश्यकता होती है, लेकिन उनकी कई सीमाएं भी हैं

- सीमित छात्र सहभागिताः परंपरागत शिक्षण विधियों की निष्क्रिय प्रकृति अक्सर छात्रों में अलगाव और प्रेरणा की कमी की ओर ले जाती है (डेसी और रयान, 2000)।
- दृढ़ताः पारंपरिक कक्षाओं की कठोर संरचना विविध शिक्षण शैलियों और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समायोजित करने में विफल हो सकती है (टॉमलिंसन, 2014)।
- सतही स्तर का सीखनाः रटने और निष्क्रिय रूप से सुनने से गहरी समझ या आलोचनात्मक सोच विकसित नहीं होती है। परीक्षा समाप्त होने के बाद छात्र सामग्री भूल सकते हैं (ब्रैन्सफोर्ड, ब्राउन, और कॉकिंग, 2000)।

इन कमियों के बावजूद, पारंपरिक तरीके अपनी सरलता, लागत–प्रभावशीलता और कार्यान्वयन में आसानी के कारण प्रचलित बने हुए हैं।

आधुनिक शिक्षण तकनीकों का उद्भव

आधुनिक शिक्षण तकनीकें शिक्षक–केंद्रित, रटने पर आधारित पारंपरिक विधियों से हटकर छात्र–केंद्रित, संवादात्मक और प्रौद्योगिकी–आधारित दृष्टिकोणों की ओर बदलाव को दर्शाती हैं। ये आधुनिक विधियाँ रचनावादी अधिगम सिद्धांतों से प्रभावित हैं, जो सक्रिय अधिगम, सहयोग और आलोचनात्मक चिंतन पर बल देते हैं। इन्हें पारंपरिक विधियों की कमियों को दूर करने और आज के विविध छात्र समुदाय की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है।

रचनावाद और सक्रिय अधिगम

आधुनिक शिक्षण तकनीकों का उद्भव रचनावादी अधिगम सिद्धांतों में गहराई से निहित है, जो यह प्रस्तावित करते हैं कि ज्ञान शिक्षक से निष्क्रिय रूप से प्राप्त होने के बजाय, शिक्षार्थियों द्वारा अनुभव के माध्यम से सक्रिय रूप से निर्मित होता है। पियाजे (1973) और वायगोत्स्की (1978) जैसे शिक्षा मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित रचनावादी सिद्धांत अधिगम प्रक्रिया में अंतक्रिया, समस्या–समाधान और आलोचनात्मक चिंतन के

महत्व पर बल देते हैं।

आधुनिक शिक्षण विधियाँ रचनावाद के सिद्धांतों पर बहुत अधिक आधारित हैं, जिनमें सक्रिय अधिगम रणनीतियाँ शामिल हैं जो छात्रों को अपने अधिगम में सक्रिय भूमिका निभाने की अनुमति देती हैं। यह परिवर्तन निम्नलिखित को प्रोत्साहित करता है

- समस्या–आधारित अधिगम (पीबीएल): पीबीएल में, छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं से परिचित कराया जाता है और वे उन्हें हल करने के लिए मिलकर काम करते हैं। यह दृष्टिकोण आलोचनात्मक सोच, सहयोग और ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग को बढ़ावा देता है।
- प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षण : पीजेबीएल पद्धति में छात्रों को ऐसे विस्तारित परियोजनाओं पर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिनमें उन्हें जटिल समस्याओं के समाधान के लिए शोध, डिजाइन और प्रस्तुतिकरण करना होता है। यह पद्धति छात्रों की गहन सहभागिता और उच्च स्तरीय चिंतन कौशल को बढ़ावा देती है (थॉमस, 2000)।
- फिलप्ड क्लासरूमः फिलप्ड क्लासरूम में, पारंपरिक व्याख्यान–आधारित सामग्री कक्षा के बाहर, अक्सर वीडियो के माध्यम से दी जाती है, जबकि कक्षा का समय सक्रिय समस्या–समाधान, चर्चाओं और समूह कार्य के लिए समर्पित होता है (बर्गमैन और सैम्स, 2012)।

प्रौद्योगिकी एकीकरण

आधुनिक शिक्षण तकनीकों के विकास में प्रौद्योगिकी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंप्यूटर, टैबलेट, डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म और इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड जैसे उपकरणों ने कक्षा को अधिक गतिशील और लचीले शिक्षण वातावरण में बदल दिया है। प्रौद्योगिकी व्यक्तिगत शिक्षण, वास्तविक समय में प्रतिक्रिया और विविध शिक्षण संसाधनों तक व्यापक पहुंच प्रदान करती है।

प्रौद्योगिकी आधारित आधुनिक शिक्षण तकनीकों के प्रमुख पहलुओं में निम्नलिखित शामिल हैं

- ई सीखनाः ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वर्चुअल क्लासरूम और डिजिटल मूल्यांकन ने शिक्षा को अधिक सुलभ बना दिया है, विशेष रूप से वयस्क शिक्षार्थियों और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वालों के लिए (गैरीसन और कनुका, 2004)।
- इंटरैक्टिव लर्निंग टूल्सकहूट, क्विजलेट और एडमोडो जैसे उपकरण इंटरैक्टिव लर्निंग और सहकर्मी सहयोग को सुविधाजनक बनाते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक आकर्षक और प्रभावी हो जाती है (हमरी एट अल., 2014)।

विद्यार्थी–केंद्रित अधिगम

आधुनिक शिक्षण तकनीकें विद्यार्थियों की स्वायत्तता और सक्रिय भागीदारी को प्राथमिकता देती हैं। पूछताछ–आधारित अधिगम, सहयोगात्मक अधिगम और विभेदित शिक्षण जैसी विधियाँ अधिक व्यक्तिगत और समावेशी कक्षा वातावरण का निर्माण करती हैं। ये विधियाँ इस बात को मानती हैं कि विद्यार्थियों की सीखने की शैलियाँ, रुचियाँ और क्षमताएँ भिन्न–भिन्न होती हैं, और इनका उद्देश्य उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण को अनुकूलित करना है।

- जांच–आधारित शिक्षाः छात्रों को प्रश्न पूछने, विषयों का अन्वेषण करने और शोध एवं चर्चा के माध्यम से उत्तर खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है (ब्रूनर, 1961)। यह विधि जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और स्वतंत्र अधिगम को बढ़ावा देती है।

- सहयोगात्मक शिक्षणः समूह कार्य, सहकर्मी शिक्षण और सहयोगात्मक शिक्षण गतिविधियाँ सहयोग, संचार और टीम वर्क कौशल को बढ़ावा देती हैं (जॉनसन और जॉनसन, 1999)।
- विभेदित निर्देशः शिक्षक छात्रों की विभिन्न अधिगम शैलियों और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी शिक्षण विधियों में बदलाव करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक छात्र अपने स्तर पर पाठ्यक्रम तक पहुंच सके (टॉमलिंसन, 2001)।

आधुनिक शिक्षण तकनीकों की ओर यह बदलाव शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण और छात्रों के सीखने के अनुभव में एक मौलिक परिवर्तन को दर्शाता है। ये तकनीकें आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और स्व–निर्देशित अधिगम को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं, जिससे छात्रों को तेजी से जटिल और परस्पर जुड़े हुए विश्व में सफलता के लिए तैयार किया जा सके।

शिक्षण विधियों और शिक्षक के आत्मविश्वास पर पूर्व अध्ययन

शिक्षण विधियों और शिक्षक के आत्मविश्वास पर उनके प्रभाव पर किए गए शोध ने शिक्षण रणनीतियों और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के बीच महत्वपूर्ण संबंध को उजागर किया है। शिक्षक का आत्मविश्वास, कक्षा को प्रभावी ढंग से पढ़ाने और प्रबंधित करने की अपनी क्षमता में शिक्षक के विश्वास को दर्शाता है। अध्ययनों से पता चलता है कि अपनाई गई शिक्षण विधियाँ शिक्षकों की आत्म–धारणा और उनकी प्रभावशीलता की भावना को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

शिक्षक के आत्मविश्वास की भूमिका

शिक्षकों का आत्मविश्वास अक्सर शिक्षण की प्रभावशीलता से जुड़ा होता है। जो शिक्षक अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखते हैं, उनके नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग करने, छात्रों को सार्थक अधिगम में शामिल करने और सकारात्मक अधिगम परिणाम प्राप्त करने की अधिक संभावना होती है। त्शानन–मोरन और होय (2001) के अनुसार, शिक्षक की आत्म–प्रभावशीलता कक्षा प्रबंधन, शिक्षण पद्धतियों और छात्र उपलब्धि को प्रभावित करती है।

शोध से पता चलता है कि उच्च आत्म–प्रभावशीलता वाले शिक्षकों में निम्नलिखित की संभावना अधिक होती है

- विविध शिक्षण विधियों और रणनीतियों का प्रयोग करें (बंडुरा, 1997)।
- पाठ्यक्रम और कक्षा की गतिशीलता में होने वाले परिवर्तनों के अनुकूल ढलें (बोंग, 2004)।
- छात्रों के साथ मजबूत संबंध बनाएं, जिससे सकारात्मक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा मिले (मिलर एट अल., 2013)।

आधुनिक शिक्षण विधियों का शिक्षकों के आत्मविश्वास पर प्रभाव

अध्ययनों से पता चला है कि आधुनिक शिक्षण विधियों को अपनाने से शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़ सकता है। उदाहरण के लिए, प्रौद्योगिकी का उपयोग और सहयोगात्मक शिक्षण पद्धतियाँ शिक्षकों को अधिक सक्षम और कक्षा प्रबंधन के लिए अधिक तैयार महसूस करने में मदद कर सकती हैं। मर्फी और मुलान (2012) के एक अध्ययन में पाया गया कि जिन शिक्षकों को प्रौद्योगिकी एकीकरण जैसी आधुनिक शिक्षण तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था, उन्होंने छात्रों को सीखने में शामिल करने और उन्हें प्रोत्साहित करने की अपनी क्षमता में उच्च स्तर का आत्मविश्वास दिखाया।

इसी प्रकार, परियोजना–आधारित शिक्षण और पूछताछ–आधारित शिक्षण जैसी छात्र–केंद्रित शिक्षण विधियों को लागू करने वाले शिक्षक अक्सर अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं क्योंकि ये दृष्टिकोण प्रभावी शिक्षण के बारे में उनकी मान्यताओं के अनुरूप होते हैं (झाओ, 2013)। ये विधियाँ शिक्षकों को छात्रों को सक्रिय रूप

से भाग लेते हुए, विषयवस्तु से जुड़ते हुए और आलोचनात्मक सोच का प्रदर्शन करते हुए देखने की अनुमति देती हैं, जो शिक्षक की प्रभावशीलता की भावना को मजबूत करती है।

आधुनिक शिक्षण में शिक्षकों के आत्मविश्वास में बाधाएँ

आधुनिक शिक्षण विधियों का शिक्षकों के आत्मविश्वास पर सकारात्मक प्रभाव होने के बावजूद, कुछ चुनौतियाँ भी हैं। शिक्षक नई तकनीकों, शिक्षण रणनीतियों या पाठ्यक्रम परिवर्तनों को अपनाने की मांगों से अभिभूत महसूस कर सकते हैं। एर्टमर (1999) के एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के तकनीकी ज्ञान और कौशल की कमी अक्सर डिजिटल उपकरणों के प्रभावी उपयोग में उनके आत्मविश्वास को कम कर देती है। इसी प्रकार, कक्षा में अत्यधिक तनाव का सामना करने वाले या पर्याप्त सहायता न पाने वाले शिक्षक आधुनिक शिक्षण तकनीकों को लागू करने में संघर्ष कर सकते हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास में गिरावट आ सकती है।

इसके अलावा, पारंपरिक शिक्षण विधियाँ, यद्यपि कम अंतक्रियात्मक होती हैं, फिर भी कई शिक्षकों के लिए अधिक पूर्वानुमानित और आरामदायक वातावरण प्रदान करती हैं। अधिक गतिशील, छात्र–केंद्रित दृष्टिकोणों की ओर संक्रमण उन शिक्षकों के लिए चिंता बढ़ा सकता है जो इन तकनीकों से अपरिचित हैं या जिनके पास आवश्यक संसाधन और प्रशिक्षण की कमी है (फुलन, 2001)।

शिक्षक व्यावसायिक विकास और आत्मविश्वास

शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़ाने में व्यावसायिक विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेषकर आधुनिक शिक्षण विधियों को लागू करने के संदर्भ में। आधुनिक शिक्षण रणनीतियों, तकनीकी उपकरणों और विद्यार्थी–केंद्रित अधिगम पर केंद्रित सतत प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएँ शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा सकती हैं (गस्की, 2002)। निरंतर व्यावसायिक विकास में संलग्न शिक्षक अपने शिक्षण अभ्यासों में उच्च स्तर का आत्मविश्वास और अधिक कार्य संतुष्टि की रिपोर्ट करते हैं (डेसिमोन, 2009)। शोध से पता चलता है कि पेशेवर विकास कार्यक्रम जो सहयोग पर जोर देते हैं और शिक्षकों को अनुभव और संसाधन साझा करने के अवसर प्रदान करते हैं, शिक्षक के आत्मविश्वास को बढ़ाने में विशेष रूप से प्रभावी होते हैं (गैरेट एट अल., 2001)।

आधुनिक शिक्षण को प्रभावित करने वाले अधिगम सिद्धांत

अधिगम सिद्धांत शिक्षा प्रदान करने के तरीके को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्षों से, विभिन्न सिद्धांत सामने आए हैं, जिन्होंने आधुनिक शिक्षण विधियों को प्रभावित किया है और शिक्षकों को अधिगम प्रक्रिया के प्रति दृष्टिकोण अपनाने और प्रभावी शिक्षण रणनीतियों को तैयार करने में मार्गदर्शन प्रदान किया है। इन सिद्धांतों ने शिक्षक–केंद्रित शिक्षण से हटकर छात्र–केंद्रित दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित किया है, जिससे ऐसे वातावरण का निर्माण हुआ है जो सहभागिता, आलोचनात्मक सोच और सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष:

आधुनिक शिक्षण विधियों को अपनाने का शिक्षकों के आत्मविश्वास पर गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह उनके लिए गतिशील, छात्र–केंद्रित और प्रौद्योगिकी–संवर्धित शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता को पूरा करता है। ये विधियाँ शिक्षकों को अधिक प्रभावी तरीके से छात्रों को संलग्न करने, सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देने और आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ाने की अनुमति देती हैं। हालांकि, पारंपरिक से आधुनिक शिक्षण विधियों में संक्रमण बिना चुनौतियों के नहीं है। शिक्षक अक्सर नई प्रौद्योगिकियों, शिक्षण रणनीतियों, या पाठ्यक्रम परिवर्तनों को अपनाने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए निरंतर प्रशिक्षण और समर्थन आवश्यक हैं। व्यावसायिक विकास कार्यक्रम जो सहयोग पर जोर देते हैं और शिक्षकों

को अनुभव और संसाधन साझा करने के अवसर प्रदान करते हैं, शिक्षकों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में विशेष रूप से प्रभावी होते हैं। एक निरंतर सीखने और समर्थन की संस्कृति को बढ़ावा देकर, शैक्षिक संस्थान यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि शिक्षक शिक्षा के बदलते परिप्रेक्ष्य में नेविगेट करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

संदर्भ

- ✓ एंटवी–बोआम्पोंग, ए. (2021). संकाय मिश्रित शिक्षण अपनाने के विरुद्ध बाधाओं की जांच। तुर्की ऑनलाइन जर्नल ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन, 22(3), 281–292.
- ✓ खलील, ए., हेलालेट, एन., और आउटमघार्टे, बी. (2025). मोरक्कन ईएफएल शिक्षकों के महत्वपूर्ण सोच दृष्टिकोण की जांचरू शिक्षण अनुभव और लिंग का प्रभाव। थिंकिंग स्किल्स एंड क्रिएटिविटी, 56, 101746.
- ✓ झांग, एल., ली, जे., और झांग, एस. (2026). प्रौद्योगिकी–समर्थित सहयोगी ईएफएल कक्षाओं में शिक्षक पारस्परिक व्यवहार, सहकर्मी सहयोग, सहायता–मांग दृष्टिकोण, शैक्षणिक जुड़ाव और सीखने के परिणामों के प्रभाव। यूरोपीय जर्नल ऑफ एजुकेशन, 61(1), म70368.
- ✓ बुचाहेद हनी, टीजेड (2024)। अल्जीरियाई माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की भाषा प्रवीणता पर शिक्षण विधियों के कार्यान्वयन और प्रभाव के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण की खोज।
- ✓ मप्या, जीएन (2021)। कक्षा में शिक्षकों के मूल्यांकन अभ्यासों के महत्व की जांचरू त्शवाने उत्तरी जिले में वरिष्ठ चरण में सीखने में बाधाओं का सामना करने वाले शिक्षार्थियों के लिए एक केस स्टडी। दक्षिण अफ्रीका विश्वविद्यालय (दक्षिण अफ्रीका)।
- ✓ हुओंग, टीटी, वी, पीएनटी, मिन्ह, एलएच, और लिन्ह, एनटी (2025)। प्राथमिक विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षकों की डिजिटल क्षमतारू 21वीं सदी के शिक्षण के लिए कथित आत्मविश्वास और निरंतर आवश्यकताएँ। शैक्षिक प्रक्रियारू अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 15(1), 1–23।
- ✓ शाहिद, एम.के., जिया, टी., बैंगफैन, एल., इकबाल, जेड., और अहमद, एफ. (2024). एआई–आधारित मूल्यांकन प्रणालियों पर विश्वविद्यालय शिक्षकों के दृष्टिकोण को निर्धारित करने में मनोवैज्ञानिक कारकों और अपनाने की तत्परता के संबंध की खोज। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एजुकेशन, 22(2), 100967.